सत्यमेव - जयते

झारखण्ड सरकार

# झारखण्ड में
# मसूर
# की वैज्ञानिक खेती

## परियोजना निदेशक
## आत्मा, रामगढ़

Web : www.atmaramgarh.org, E-mail : atmaramgarh@gmail.com

रबी की दलहनी फसलों में मसूर का प्रमुख स्थान है। इसकी खेती सभी प्रकार की मिट्टी, परिस्थितियों व असिंचित क्षेत्रों में सफलतापूर्वक की जा सकती है। मसूर का उपयोग दाल, नमकीन व अन्य खाद्य पदार्थों के अतिरिक्त मवेशियों के दाना व चोकर के रूप में किया जाता है। मसूर की दाल पोषक तत्वों के लिए एक सस्ता एवं प्रमुख स्रोत है। इसमें 24–26 प्रतिशत प्रोटीन, 1.3 प्रतिशत वसा, 2.2 प्रतिशत लवण तथा पर्याप्त मात्रा में कैल्शियम, लोहा, विटामिन सी तथा राइबोफ्लोविन मौजुद होता है। इस फसल को उगाने से मृदा की उर्वरा शक्ति में वृद्धि के साथ–साथ भौतिक दशा में भी सुधार होता है।

वैज्ञानिक विधि से खेती करके झारखण्ड में मसूर का उत्पादन काफी हद तक बढ़ाया जा सकता है। अतः फसल की अच्छी पैदावार हेतु निम्नलिखित वैज्ञानिक विधियों को अपनाकर खेती करना लाभप्रद होगा।

## उन्नत किस्में

उन्नत किस्मों के प्रयोग से मसूर के उत्पादन में 20–30 प्रतिशत तक वृद्धि की जा सकती हैं इस प्रदेश के लिए उन्नत प्रजातियाँ निम्नलिखित है :

**बी. आर – 25** : यह बड़ें आकार के बीज वाली किस्म है तथा स्थानीय जनन–द्रव्य से तैयार की गयी है।

इसकी पत्तियाँ रोयेदार और गहरे हरे रंग की होती हैं। फूल

हल्के गुलाबी तथा बीज ईंट जैसे लाल रंग के एवं बीच–बीच में कालें धब्बे वाले होते हैं। यह किस्म 120–125 दिनों में पककर 5.2–6.0 क्विंटल / एकड की औसत उपज देती है।

एल. 9–12 : यह किस्म 130–135 दिनों में पककर 6.0–7.2 क्विंटल / एकड की औसत उपज देती है। इसके पौधे झाड़ीदार एवं ऊर्ध्व, फूल बैंगनी रंग के तथा बीज भूरे–धूसर रंग के चित्तीदार होते है। इस किस्म के पाधे 'रस्ट' के प्रति अवरोधी होते हैं।

पी. एल. – 406 : यह किस्म 130–140 दिनों में पककर 7.2–8.0 क्विंटल / एकड की औसत उपज देती हैं। इसके पौधे थोड़ा फैलाव लेने वाले होते है तथा हल्के हरे रंग के होते हैं। इसके फूल बैंगनी रंग के और बीज मध्यम आकार के एवं गुलाबी–धुसर रंग के होते है। यह किस्म 'रस्ट' के प्रति अवरोधी है एवं विलम्ब से बुआई के लिए उपयुक्त है।

पी. एल. – 639 : यह किस्म 130–135 दिनों में पककर 7.2–8.0 क्विंटल / एकड की औसत उपज देती है। इसके पौधे भी थोड़ा फैलाव लेने वाले होते हैं। पुष्प बैंगनी रंग के एवं बीज मध्यम आकार व धूसर रंग के होते है। यह किस्म 'विल्ट' और 'ब्लाइट' बीमारियों के प्रति अवरोधी है।

## भूमि का चयन व तैयारी :

मसूर सभी प्रकार की मृदाओं में उगाई जा सकती है। उत्तम जल निकास वाली दोमट मिट्टी मसूर की खेती के लिये सबसे

उपयुक्त मानी जाती है। खरीफ फसल काटने के पश्चात भूमि को एक गहरी जुताई कर लें तथा उसके बाद दो–तीन जुताई हैरो या देशी हल से करके पाटा चलाकर खेत को समतल कर लें। बुआई के समय भूमि में उचित नमी का होना अति आवश्यक है।

## बुआई का समय

मसूर के अच्छी फसल के लिए मध्य अक्टूबर से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक का समय सर्वोत्तम है। बुआई के समय कतार से कतार की दूरी 25–30 सेंमी. तथा पौधा से पौधा की दूरी 8–10 सेंमी. रखें।

## बीज व बीजोपचार

एक एकड भूमि में बुआई के लिये 10–12 कि.ग्रा. बीज की आवश्यकता होती है। बुआई से पूर्व प्रति किलोग्राम बीज को 3 ग्राम थीरम या 2 ग्राम बेविस्टीन से उपचारित कर लें। ऐसा करने से बीज द्वारा आने वाली बीमारियाँ नष्ट हो जाती है। यदि खेत में मसूर की फसल पहली या 4–5 वर्ष के बाद उगाई जा रही है तो बीज के बुआई से पूर्व मसूर के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित कर लेना चाहिए। 10 कि. ग्रा. बीज के लिये एक पैकेट (200 ग्राम) राइजोबियम कल्चर (जीवाणु खाद) पर्याप्त रहता है। प्रयोग विधि पैकेट पर लिखी होती है।

## उर्वरक प्रबन्धन

मसूर की अच्छी फसल लेने के लिए प्रति एकड़ 8 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, की 16 कि.ग्रा. फॉस्फोरस तथा 8 कि.ग्रा. पोटाश बुआई के पहले कतारों में डाल दें। मसूर की फसल प्रायः धान फसल के कटाई के बाद ली जाती है। इस कारण मृदा में जिंक तत्व की कमी होजाती है। इस कमी को दूर करने के लिए 6–8 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट प्रति एकड़ की दर से उर्वरकों के साथ प्रयोग करें।

## खरपतवार नियंत्रण

अनुसंधान में पाया गया है कि खरपतवारों के कारण मसूर की उपज में 40 से 60 प्रतिशत तक की कमी हो सकती है। यांत्रिक विधि द्वारा खरपतवार नियंत्रण के लिए फसल को बुआई के 25–30 दिन व 45–50 दिन बाद दो निराई–गुड़ाई आवश्यकतानुसार की जानी चाहिए। रासायनिक विधि द्वारा खरपतवार नियंत्रण के लिए बेसालिन 0.75 सक्रिय तत्व को 320–400 लीटर पानी घोलकर प्रति एकड की दर से बुआई से पहले मिट्टी को हैरो या कल्टीवेटर की सहायता से मिला दें।

## रोग एवं रोकथाम

**मसूर को मुख्यतः** दो फफूँदीजनित रोग 'उकठा' व 'रतुआ' सर्वाधिक नुकसान पहुँचाते है।

### उकठा

उकठा रोग के प्रकोप से पौधे पीले पड़कर सूख जाते है। उकठा प्रभावित क्षेत्र में लम्बी अवधि का फसल चक्र अपनाना चाहिए। रोगरोधी किस्में जैसे पी.एल. 406 और और पी. एल. 639 का प्रयोग करना चाहिए।

### रतुआ

रतुआ रोग से प्रभावित पौधे की पत्तियों व तने पर भूरे रंग के धब्बे दिखाई देने लगते है। इससे पौधे की प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया धीमी हो जाती है

जिससे फसल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस रोग की रोकथाम हेतु रोगरोधी किस्मों जैसे एल. 9–12 और पी.एल. 406 का प्रयोग करना चाहिए तथा इसके नियंत्रण के लिए मैंकोजेब 800.गा. प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

## कीट एवं रोकथाम

मसूर की फसल को मुख्य रूप से रोयेंदार गिडार, माहू व फली

छेदक अधिक हानि पहुँचाते हैं। रोयेंदार गिड़ार की रोकथाम के लिए 500 मि. थायोडान को 230 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ फसल पर छिड़काव करे। माहू व फली छेदक की रोकथाम हेतु मोनोक्रोटोफॉस 36 ई.सी. की 320 मि.ली. मात्रा को 320 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करे।

## कटाई एवं भण्डारण

जब फलियाँ और पत्तियाँ भूरी पड़ जाये, तब फसल की कटाई कर लेनी चाहिए। काटे हुए फसल को धूप में सुखाकर भली–भांति दौनी कर ले। दौनी की गयी फसल को 2–3 दिनों तक धूप में सुखाकर भण्डारण करें।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें :

**परियोजना निदेशक, आत्मा, रामगढ़**

न्यू बिल्डिंग, ग्राउंड फ्लोर
सी–ब्लॉक, छतरमांडु, रामगढ़